ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XI, Issues– I
Jan –Feb 2022

OPEN ACCESS

Original Research Article

पार्श्वगायकों की प्रेरणा : लता मंगेशकर

डॉ. वंदना शर्मा,

निदेशक , असोसिएट प्रोफेसर भगनी निवेदिता कॉलेज दिल्ली यूनिवर्सिटी

शोध सारांश:

भारत की स्वर-कोकिला लता मंगेशकर, जो अपने मधुर स्वर से हम सब के कानों में रस घोलती रही, जिसकी आवाज का जादू देश-विदेश के लोगों के सर चढ़ कर बोलता था, वह ६ फेब्रुअरी २०२२ को हमारे बीच नहीं रहीं। काल के निष्ठुर देवता भी उनके संगीत से सम्मोहित हो गए और उन्हें हम से छीन लिया। इस नश्वर देह को छोड़ कर वे अपने अंतिम सफर पर निकल गई। ६ फेब्रुअरी २०२२ का दिनजब हम बसंतऋतु के आनन्द में सराबोर थे,कवि प्रदीप के जन्मदिवस का आनन्द मनाते हुए जब हम उन्हीं का गाया हुआ गीत ऐ मेरे वतन के लोगों को सुनकर देशभक्ति की भावना का परिचय दे रहे थे,तभी हमें समाचार मिला की लता दीदी अब नहीं रहीं। स्वरों की साम्राग्गी,जिनके मनमोहक संगीत का लोहा दुनियाँ मानती है,जिन्होंने सिनेमा जगत की अनगिनत तारिकाओं को अपनी आवाज से सिल्वर लाइन पर जीवंत कर दिया,उन्हीं की आवाज हम से छीनगई। जीवन तथा मृत्यु तो एक अटल सत्य है। दुनियाँ में कोई भी अमर होकर नहीं रहा। लेकिन लता दीदी का जाना एक ऐसी अपूर्णिया क्षति है जिस को कभी भरा नहीं जा सकता

पारिभाषिक शब्दावली- नाम गुम जाएगा,चेहरा ये बदल जाएगा। मेरी आवाज़ ही पहचान है,गर याद रहे।

Copyright © 2022 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

प्रस्तावना

कौन भूल सकता है उस मनमोहक जादुई आवाज़ को जो अनेक दशकों से हमारे दिलों पर राज कर रही थी। लता जी का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। आपकी आवाज़ ही आपकी पहचान थी । सधी हई, सुरीली एवं मधुर ध्वनि,स्वभाव की सरलता एवं आप के व्यक्तित्व की गरिमा आज भी आपके चाहने वालों को प्रभावित किये बिना नहीं रहती।

भारतीय ज्ञान परम्परा

लता मंगेशकर का जन्म इंदौर मध्यप्रदेश में २८ सितंबरए १९२९ ई. में हुआ था। पिता दीनानाथ मंगेशकर एक कुशल रंगमंचीय गायक थे। लता जी भाई-बहनों में सबसे बड़ी थीं । तीन छोटी बहनें - आशा [भोसले],ऊषा तथा मीनू और एक छोटा भाई हृदयनाथ मंगेशकर - हैं।

संगीत में लता जी को गहरी रुचि थी। पांच वर्ष की छोटी आयु में ही आपको पहली बार एक नाटक जिसमें पिता भी काम कर रहे थे,में अभिनय करने का अवसर मिला। शुरुआत अवश्य अभिनय से हुई किंतु आपकी दिलचस्पी तो संगीत में थी। आपने अभिनय के विषय को कभी गंभीरता से नहीं लिया। ईश्वर ने आपको एक ऐसी मन-मोहक ध्वनि दी थी,जो एकबारगी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देती थी।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XI, Issues– I
Jan –Feb 2022

OPEN ACCESS

Original Research Article

आपकी प्रतिभा और लगन को देखते हुए आपकी संगीत-शिक्षा का भी प्रबंध किया गया। आपको उस समय के दो प्रतिष्ठित संगीतों - अमान खां और अमानत अली - से संगीत सीखने का अवसर मिला। किंतु अधिक समय तक यह संभव न हो सका। १९४२ ई में हृदय-गति के रुक जाने से पिता का देहांत हो गया। पिता के आकस्मिक निधन से परिवार पर कुठाराघात हुआ। तेरह वर्ष की अल्पायु में ही लता जी को परिवार की सारी जिम्मेदारियां अपने नाजुक कंर्धा पर उठानी पड़ी। उस समय नाटकों में काम करने का अनुभव बहुत काम आया। अपनी रुचि के विपरीत आपको फिल्मों में अभिनय करके परिवार को सहारा देना पड़ा।

परिवार के उत्तरदाइत्व को देखते हुए आपने कई फिल्मों में अभिनय भी किया। इन में से कुछ के नाम हैं:पहेली मंगलागौर [१९४२],माझे बाल [१९४४],गजाभाऊ [१९४४],छिमकला संसार,[१९४३], बडी माँ[१९४५],जीवन यात्रा [१९४६],छत्रपति शिवाजी [१९५२] इत्यादि।

लेकिन आपका मन तो अभिनय से कहीं दूर स्वरों के मधुर संसार में विचरण कर रहा था। अभिनय आप की विवशता थी - परिवार के भरण-पोषण के लिये। आपकी मंज़िल तो संगीत ही थी। १९४२ में आपको पहली बार फिल्मकित हालमें गाने का अवसर मिला। दुर्भाग्यवश एडिटिंग के समय यह गीत काट दिया गया और फिल्म में नहीं शामिल हुआ।

सफलता की राह कभी भी आसान नहीं होती है। लता जी को भी अपना स्थान बनाने में बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। कई संगीतकारों ने तो आपको शुरू-शुरू में पतली आवाज़ के कारण काम देने से साफ मना कर दिया था। उस समय की प्रसिद्ध पार्श्व गाइका नूरजहाँ [जो विभाजन के समय पाकिस्तान चली गयीं] के साथ लता जी की तुलना की जाती थी। लेकिन धीरे-धीरे अपनी लगन और प्रतिभा के बल पर आपको काम मिलने लगा।

लता जी की प्रतिभा को पहचान मिली सन् १९४७ में, जब फिल्मआपकी सेवा में में उन्हें एक गीत गाने का मौका मिला। गीत के बोल थे - पाय लागूं कर जोरी रे। इस गीत के बाद तो आपको फिल्म जगत में एक पहचान मिल गयी और एक के बाद एक कई गीत गाने का मौका मिला। इन में से कुछ प्रसिद्ध गीतों का उल्लेख करना यहां अप्रासंगिक न होगा जिसे आपका पहला शाहकार गीत कहा जाता है वह १९४९ में गाया गया आएगा आने वाला। इस के बाद आपके प्रशंसकों की संख्या दिनोदिन बढ़ने लगी। इस बीच आपने उस समय के सभी प्रसिद्ध संगीतकारों के साथ काम किया। अनिल बिस्वास,सलिल चौधरी,शंकर जैकिशन,एस डी बरमन,आर डी बरमन,नौशाद, मदनमोहन, सी रामचंद्र इत्यादि सभीसंगीतकारों ने आपकी प्रतिभा का लोहा माना। आपने महल,बरसात,एक थी लड़की,बड़ी बहन आदि फिल्मोंमें अपनी आवाज़ के जादूसे इन फिल्मों की लोकप्रियता में चारचाँद लगाए। इस दौरान आपके कुछ प्रसिद्ध गीत थे: ओ सजना बरखा बहार आई (परख-१९६०),आजा रे परदेसी (मधुमती१९५८),इतना ना मुझसे तू प्यार बढा (छाया-१९६१),अल्ला तेरो नाम,(हम दोनो-१९६१)ए एहसान तेरा होगा मुझ परए (जंगली-१९६१),ये समा, (जब जब फूल खिले-१९६५) इत्यादि।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XI, Issues– I
Jan –Feb 2022

OPEN ACCESS

Original Research Article

लता जी को सर्वाधिक गीत रिकार्ड करने का भी गौरव प्राप्त था । फिल्मी गीतों के अतिरिक्त आपने गैरफिल्मी गीत भी बहुत खूबी के साथ गाए हैं। १९६२ के भारत-चीन युद्ध के बाद शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिये एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इस में तत्कालीन प्रधानमंत्री पं जवाहरलाल नेहरू भी उपस्थित थे। इस समारोह में लता जी के दवारा गाए गये गीतएँ मेरे वतन के लोगों को सुन कर सब लोग भाव-विभोर हो गये थे। पं. नेहरू की आँखें भी डबडबा आई थीं। ऐसा था आपका भावपूर्ण एवं मर्मस्पर्शी स्वर। आज भी जब देश-भक्ति के गीतों की बात चलती है तो सब से पहले इसी गीत का उदाहरण दिया जाता है।

आपने गीत,गजल,भजन,संगीत के हर क्षेत्र में अपनी कला बिखेरी है। गीत चाहे शास्त्रीय संगीत पर आधारित होए पाश्चात्य धुन पर आधारित हो या फिर लोक धुन की खुशबू में रचा-बसा हो-हर गीत को लता जी अपनी आवाज़ के झादू से एक ऐसे जीवंत रूप में पेश करती हैं कि सुनने वाला मंत्रमुग्ध हो जाता है।

लता जी ने युगल गीत भी बहुत खूबी के साथ गाए हैं। मन्ना डेए महम्मद रफीए किशोर कुमारए महेंद्र कपूर आदि के साथ-साथ आपने दिग्गज शास्त्रीय गायकों पं भीमसेन जोशीए पं जसराज इत्यादि के साथ भी मनोहारी युगल-गीत गाए हैं। गज़ल के बादशाह जगजीत सिंघ के साथ आपकी एलबम सजदा ने लोकप्रियता की बुलंदियों को छुआ।

संगीत आपके लिए केवल व्यवसाय नहीं । आपकी जीवन शैली में ही एक प्रकार का संगीत या । आपने अपना संपूर्ण जीवन संगीत को समर्पित कर दिया। संगीत ही आपके जीवन की सबसे बड़ी पूंजी थी। आज के युग में जब संगीत के नाम पर फूहड़ता और अश्लीलता परोसी जा रही है और लोकप्रियता के लिए गायक हर परिस्थिति से समझौता करने को तैयार है,हमारे लिए लता जी एक प्रेरणा-ज्योति की तरह है जो संगीत के अंधकारपूर्ण भविष्य को देदीप्यमान कर सकती है।

लताजी से जुड़े कुछ रुचिकर तथ्य आरंभ में जब पार्श्वगायन का सूत्रपात हुआ तब गायक-गायिकाओं के साथ संगीत कंपनियां एक अनुबंध करती थीं जिसके अनुसारए पार्श्वगायकों को गीत की रिकार्डिंग के उपरांत एकमुश्त निर्धारित पैसे दे दिए जाते थे। उसके बाद उस गीत पर कलाकार का कोई दावा मान्य नहीं होता था। परिणाम यह होता था की बाद में गीत जब भी किसी प्रसारण माध्यम से बजाया जाता था तो इससे संबंधित कापीराइट शुल्क कलाकार को न मिल कर संगीत कंपनी को प्राप्त हो जाता था। गायकों को गीत की लोकप्रियता का कोई लाभ नहीं हो पता था। इस संदर्भ में कलाकार आपस में विभाजित थे। लेकिन लताजी ने यह जिम्मा अपने ऊपर लिया की कापीराइट तो कलाकार को ही मिलना चाहिए। काफी समय तक विवाद चलता रहा लेकिन अंत में जीत लताजी की ही हुई। संगीत कंपनियों और कलाकारों के बीच यह समझौता हुआ की गीत के कापीराइट पर कलाकार का भी अधिकार है और उसे भी गीत के प्रसारित होने से लाभ होना चाहिए।इस विषय में मुहम्मद रफी साहब और लता जी में कुछ समय के लिए कुछ मन-मुटाव भी हो गया था जो बाद में ठीक हो गया. इसी प्रकारए लताजी १९९९ के नवंबर मास से छह वर्षों के लिए नवंबर २००५ ईस्वी तक भारत की राज्य सभा (परी सदन) की सदस्य रही इस काल में आपने तो कोई भत्तेलिए और न ही सांसद के रूप में आपमे कोई वेतन स्वीकार किया। जो कुछ आपको पे एंड एकाउंट की ओर से प्राप्त हुआ था उसे आपने नम्रतापूर्वक वापस कर दिया

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XI, Issues– I
Jan –Feb 2022

OPEN ACCESS

Original Research Article

उपलब्धियां और पुरस्कार आपकी अनेकानेक सांगीतिक उपलब्धियों के लिए आपको असंख्य पुरस्कारों से नवाजा गया। लेकिन आप ने कभी पुरस्कारों को अपनी मंजिल नहीं समझा। अब हम लता दीदी की कुछ उपलब्धियों की चर्चा करते हैं। वैसे तो उन पर अनगिनत पुरस्कारों की वर्षा होती रहीए लेकिन यहाँ हम कुछ ही पुरस्कारों की चर्चा करेंगे। १९६९ ईस्वी में आपको भारत सरकार ने पद्मभूषण की उपाधि से अलंकृत किया। १९८९ ईस्वी में आपको दादासाहब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। १९९९ ईस्वी में पद्मविभूषण से सम्मानित किया गया। २००१ ईस्वी में भारत सरकार के सबसे बड़े अलंकरण भारत रत्न से आप सम्मानित हुईं २००८ ईस्वी में भारतीय स्वतंत्रता की साठवीं सालगिरह के अवसर पर भारत सरकार ने आपको आपके प्लेबैक सिंगिंगके लिए आपको लाइफटाइमपुरस्कार से नवाजा। इसके अतिरिक्तए आपको अनेक फिल्म पुरस्कार भी समय-समय पर मिलते रहे।

इसके अतिरिक्तए अनेक राज्या,महाराष्ट्र,मध्यप्रदेश इत्यादि की सरकारों के द्वारा भी आपको अनेक पुरस्कार प्रदान कीये गए। अनेक निजी संस्थाओं के द्वारा भी आपको अनेक पुरस्कारों एवं उपाधियों से सुशोभित किया गया. अनगिनत पुरस्कारों तथा उपाधिों से विभूषित लता जी को राष्ट्र सदा ही अनुग्रहित करता रहा। बदले में लता दीदी ने भी देश के प्रति अपने कर्तव्यों में कभी कोई कोताही नहीं की। वे भारत के गौरव का प्रतीक बनी रही। इतनी अधिक ख्याति अर्जित कर लेने के उपरांत भी लता जी को घमंड तो छू तक नहीं गया था। नम्रताऔर साधारणता आपके व्यवहार में सदा रही.

नयी फिल्मों में आपनेदिल तो पागल है,हम आपके हैं कौन,दिलवाले दुल्हनिया ले जायेंगे,रंग दे बसंती,इत्यादि में अपनी आवाज़ का जादू जगाया। आपकी बाद की प्रायवेट एल्बमें भी काफी लोकप्रिय हई हैं। लेकिन आज कल आप बहुत कम गा रही थी। कुछ उम का तकाज़ा और कुछ संगीत का गिरता स्तर। आप केवल अपने शौक के लिए कभी-कभी गाती थी। लेकिन आपके द्वारा गाए गये गीत आज भी लाखों संगीत प्रेमियों को सुकून और प्रेरणा दे रहे हैं। अधिकतर नए कलाकार आपको ही अपना प्रेरणास्रोत मानते हैं.

आप का संगीततो सम्मोहक था हीआप एक कोमल मन भी रखती थीं। अनेक सरकारी और निजी सेवा-संगठन आपकी आर्थिक सहायता पर निर्भर थे। आप मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिए दिल खोल कर खर्च करती रहती थीं। निर्धनों और जरूरतमंदों की आप अक्सर सहायता करती थीं। आपने प्राकृतिक आपदाओं के दौरान कई बार चैरिटी शो कीये और कार्यक्रम से अर्जित धन को मानव-सहायतार्थखर्च किया। आपका जीवन मानवता की मिसाल बना रहेगा. जगजीत सिंह के साथ गाए गीत से हम अपनी बात समाप्त करते हैं जो आज भी उनकी याद दिला रहा

चिट्ठी न कोई संदेशए जाने वो कौनसा देश,जहां तुम चले गए।

संदर्भ-ग्रन्थ सूची

Hindustani Music In The 20th Century Wim Van Der Meer, 1980, Martinus Nijhoff Publishers, London.

Hindustan Times:Lata Mangeshkar: A Voice That Reshaped India's Popular Culture, February 7, 2022

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XI, Issues– I
Jan –Feb 2022

OPEN ACCESS

Original Research Article

(Online) Https://Www.Hindustantimes.Com/India-News/Lata-Mangeshkar-A-Voice-That-Reshaped-India-S-Popular-Culture-101644187281250.Html

Lata Mangeshkar: The Singer And The Voice, Ashwini Deshpande, Vol. 39, No. 48 (Nov. 27 - Dec. 3, 2004), Pp. 5179-5184 (6 Pages) Published By: Economic And Political Weekly Https://Www.Jstor.Org/Stable/4415842

Cassette Culture: Popular Music And Technology In North India, Peter Manuel, New Delhi, 2001.

Amulya Gopalakrishnan, 'An Agenda For The Arts', Frontline, Vol 20, Issue 4, 2004, Also Available Online, Http//Www.Flonnet.Com/Fl2004/Stories/20030228001708500.Htm.

Cite This Article:

डॉ. वंदना शर्मा, (2022). *पार्श्वगायकों की प्रेरणा :लता मंगेशकर, Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal, XI (I),231-235*